अध्याय 4

आदम और हव्वा का परिवार

उत्पत्ति 2:7-3:24 अदन की वाटिका में रहने वाले आदम और हव्वा की कहानी का वर्णन करता है। वे परमेश्वर की दुनिया में उसकी शर्तों के अनुसार जीने में असफ़ल रहे और वाटिका से निर्वासित कर दिए गए। सो उत्पत्ति 4:1-24 प्रथम जोड़े के उन अनुभवों का वर्णन करती है जो उन्हें धरती के स्वर्ग (अदन की वाटिका) के बाहर जा कर हुए। हव्वा ने दो बेटों को जन्म दिया: कैन और हाबिल। उनके जीवन से हम पाप के भयंकर फल और उसके विनाशकारी परिणाम को पुनः आदम और हव्वा के घर में देखते है। छोटे पुत्र की अपने बड़े भाई के द्वारा हत्या कर दी जाती है।

उत्पत्ति का लिखने वाला आगे इस बात को भी सूचित करता है कि कैसे बड़े स्तर पर पाप समाज में फैलता है, जब तक कि कैन के वंश से किसी ने हत्या को बड़ाई की बात समझते हुए, इस किए गए कार्य को गौरव के समान पहन लिया। आखिरकार अध्याय के अंत में (4:25, 26) एक आशा कि किरण नज़र आती है। आदम और हव्वा की तीसरी संतान उत्पन्न हुई; और उसके बाद से मनुष्य परमेश्वर का नाम लेकर उसे पुकारने लगे।

वाटिका के बाहर (4:1-16)

कैन और हाबिल का जन्म (4:1, 2)

[1]जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उसने गर्भवती हो कर कैन को जन्म दिया और कहा, "मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है।" [2]फिर वह उसके भाई हाबिल को भी जन्मी, और हाबिल तो भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु कैन भूमि की खेती करने वाला किसान बना।

आयत 1. अध्याय का आरम्भ इस वाक्य से होता है कि आदम **अपनी पत्नी हव्वा के पास गया**। यह वाक्य सीधे शब्दों में यही कहता है कि आदम अपनी पत्नी को "जानता" יָדַע *(यदा)* था (KJV देखें)। यह इब्रानी शब्द सामान्यतः यौन संबंध को दर्शाने के लिए उत्पत्ति में इस्तेमाल किया गया है (4:1, 17, 25; 19:8; 24:16; 38:26)। इसका मतलब यह है कि वह उसे अच्छी रीति से जानता था।

वह गर्भवती हुई और पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम उसने कैन रखा קַיִן *(क़ायिन)*। कैन नाम का मूल शब्द अस्पष्ट है और इसे किसी दूसरे मूल शब्द קָנָה *(किन)*; ढालना; से नहीं जोड़ना चाहिए। बल्कि, 4:1 - उसी के समान शब्दों का इस्तेमाल - उसे दूसरे मूल शब्द के साथ जोड़ता है קָנָה *(कनाह)*, जिसका अर्थ "अधिकार रखना" या "आगे लाना" है[1]।

कैन के जन्म पर हव्वा की प्रतिक्रिया को NASB ने इस तरह से अनुवादित किया है: **"मैं ने यहोवा कि सहायता से एक पुरुष पाया है।"** इब्रानी शब्द; पुरुष या बालक का अनुवाद अधिकतर पुरुष אִישׁ *(इश)* के रूप में किया गया है (see KJV; NRSV; NIV; ESV)। हव्वा ने पुत्र या बालक के बजाय इस शब्द का प्रयोग क्यों किया? शायद वह शब्दों से खेल रही थी इस आधार पर कि वह पुरुष से निकाली गई थी אִישׁ' *(इश)* और तब वह स्त्री कहलाई אִשָּׁה (*इशाह;* 2:23)। वह अब एक स्त्री *(इशाह)* होकर, उसने एक पुरुष *(इश)*[2] को जन्म दिया। पौलुस इस परस्पर निर्भर सम्बन्ध पर ज़ोर दे रहा था जब उसने लिखा, "क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है" (1 कुरि. 11:12; NIV)।

इस आयत का कठिन भाग אֶת (*इथ*) शब्द का अनुवाद करना है जिसके लिए अधिकतर अंग्रेज़ी अनुवाद में पूर्वसर्ग "साथ" का प्रयोग किया गया है। NASB अनुवाद में अंग्रेज़ी शब्द "with" के साथ "the help of" का इस्तेमाल किया गया है जिसका मतलब "की सहायता से" है, जो कि इब्रानी लेख में नहीं पाया जाता है। मूसा की व्यवस्था में से इस वाक्यांश का सबसे प्राचीन और सटीक अरामी भाषा में अनुवाद ओन्केलोस के तारागुम (Targum of Onkelos) में "परमेश्वर के समक्ष से"[3] से यह ज्ञात होता है कि नवजात शिशु परमेश्वर का उपहार है। LXX लेख की इस सोच से सहमत है। उसके पास διά τοῦ θεοῦ *(दिया तोऊ थियो;* "परमेश्वर की ओर से") है, जो इस बात का संकेत करता है कि हव्वा ने परमेश्वर के माध्यम से बच्चे को प्राप्त किया।

ओन्केलोस के तारागुम, इस इब्रानी लेख מֵאֵת *(मीएथ)* की व्याख्या में कुछ भिन्न तरह के अनुवाद का सुझाव देता है। मूल समस्या ये है कि MT के अनुसार पूर्वसर्ग "के साथ"; אֵת *(एथ)* में स्वर बिंदु नहीं है, और न ही, इब्रानी वर्तनी में शब्द "से" - מֵ *(में)* यह पाया जाता है, बल्कि इसके पास वह स्वर बिंदु हैं जो प्रत्यक्ष वस्तु का संकेत करता है, या उस शब्द की पिछली संज्ञा אֵת *(एथ)* के समानाधिकरण के रूप में हो। इसका अर्थ ये है कि यह लेख जैसा है, शब्द यही कहता है "मैंने एक पुरुष पाया है: प्रभु।" इससे कुछ विद्वान यह दावा करते हैं की हव्वा ने सोचा की उसने प्रतिज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता, प्रभु, को जन्म दिया और कैन के जन्म के साथ ही उसे दण्ड से तत्काल मुक्ति मिल जाएगी।[4]

पलिस्तीनी तारगुम भी कुछ इसी प्रकार की व्याख्या प्रस्तुत करता है जैसा हव्वा ने कहा, "मैंने एक पुरुष को प्राप्त किया, प्रभु का दूत।"[5] यह अनुवाद इस विचार को प्रतिबिंबित करता है जो उत्पत्ति में पाया जाता है, कि प्रभु का दूत स्वयं यहोवा का पर्यायवाची है, उसके लिए बोला जा रहा और उसे ही दर्शाया जा रहा है (16:7-13; 21:17-20; 22:11-18; 31:11-13; 48:15, 16)।

हम निश्चित तौर पर नहीं कह सकते कि *(मासोरेटेस)* जिन्होंने लगभग 800 ई. में स्वर बिंदुओं को इब्रानी व्यंजन लेख में सम्मिलित किया था, वे पूर्वसर्ग "के साथ" אֶת *(एथ)* के प्रयोग के बजाये, प्रत्यक्ष वस्तु אֵת *(एथ)* के चिन्ह का प्रयोग करने में बिल्कुल सही थे। जबकि, हव्वा के द्वारा की गयी आनंद कि अभिव्यक्ति का कोई सटीक मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, परन्तु इतना कह सकते है कि उसने ये अवश्य सोचा कि कैन के जन्म के पीछे "परमेश्वर" शामिल है (देखें 29:31; 30:22; 33:5; 48:9; अय्यूब 31:15; भजन 127:3; 139:13; यिर्म. 1:5)। उसकी दृष्टि में, यह नवजात शिशु या तो प्रभु था (उसके प्रतिनिधि के भाव में) या प्रभु की ओर से, प्रभु के माध्यम से, या प्रभु की सहायता के द्वारा, जैसे कई अंग्रेज़ी अनुवाद इब्रानी लेख को प्रस्तुत करते हैं। चाहे कुछ भी हो, अपने पहलौठे पुत्र के लिए हव्वा की ख़ुशी और स्वप्न टूट जायेगा और अपने बेटे के लिए उसकी आशा खत्म हो जाएगी। उसकी पीड़ा को कम करने के बजाय, वह उसे एक घाव देगा जो निःसंदेह जीवन भर के लिए उसके हृदय की पीड़ा का कारण होगा।

आयत 2. कुछ समय बाद, हव्वा ने **उसके** [कैन] **भाई हाबिल को जन्म दिया**। हव्वा के दूसरे पुत्र का जन्म का वास्तविक वर्णन किया गया है जिसका तात्पर्य यह है कि वह अपने प्रथम पुत्र कैन की तुलना में हाबिल से ज़्यादा उम्मीद नहीं कर रही थी। वस्तुतः, हव्वा ने अपने प्रथम पुत्र कैन के जन्म के समय जो बातें कही थीं उसके तुलना में दूसरे पुत्र के जन्म के समय कुछ न कहना इस बात का प्रमाण है कि वह इस बच्चे के जन्म से ज़्यादा प्रसन्न नहीं थी। क्या वह सुन्दर नहीं था या फिर वह कैन के समान हट्टा कट्टा नहीं था? हमें यह नहीं पता था कि उसके मस्तिष्क में उस समय क्या चल रहा था लेकिन उसके नाम का अर्थ उसके जीवन के रहस्यों से पर्दा उठाता है।

हाबिल הֶבֶל *(हेबेल)* का अर्थ "वाष्प," "श्वास" या "व्यर्थ" हो सकता है। यह शब्द पुराने नियम में झूठे देवी देवताओं के लिए प्रयोग किया गया है; इसका अनुवाद "मूर्तियों" के लिए किया गया है जो यह घोषणा करता है कि वे "व्यर्थ" या "कुछ भी नहीं" हैं। यह कभी कभी उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया है जिसने अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर दी है और "व्यर्थ ही अपना बल खो दिया है" (यशा. 49:4)। सभोपदेशक में यह छत्तीस बार उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया है जिसने कुछ प्राप्त किया या फिर यूँ ही चीज़ों को प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन जीवन में उसको कुछ भी संतुष्टि नहीं मिली।[6] असंतुष्ट होने के कारण प्रचारक ने लगातार यह कहा कि सब "व्यर्थ" या "व्यर्थता" और "हवा को पकड़ना है" (देखें सभो. 2:11, 17)। फिर भी, हाबिल के नाम के पीछे, हेबेल उसके जीवन की बहादुरी को धूमिल करता है, जो उसके भाई कैन ने उसको अंजाम दिया। हाबिल का जीवन इस धरती पर अस्थाई था - यह "वाष्प" या "श्वास" के समान था।[7]

हाबिल को भेड़ बकरियों को चराने वाला कहा गया है,[8] जबकि **कैन खेती बाड़ी करने वाला** था।[9] कुछ विद्वानों का मत है कि यह कहानी प्राचीन सभ्यता में दो विभिन्न जीवन शैलियों के मध्य वर्ग संघर्ष को दर्शाता है: एक खेती बाड़ी और

स्थाई निवास तथा दूसरे चरवाहे और भ्रमणकारी जीवन। वर्णन में कहीं पर भी किसी एक जीवन शैली का समर्थन नहीं किया गया है, न परमेश्वर, और न मनुष्य के द्वारा। कैन और हाबिल के बीच अंतर उनके द्वारा अपनाए गए पेशे पर आधारित नहीं है बल्कि वह तो उनके हृदय की भावनाओं पर आधारित है।

कैन और हाबिल का बलिदान और परमेश्वर का प्रत्युत्तर (4:3-7)

[3]कुछ दिनों के पश्चात कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया। [4]और हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, [5]परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई। [6]तब यहोवा ने कैन से कहा, "तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है? [7]यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।"

आयतें 3-5. गुज़रते **समय** के साथ-साथ कैन और हाबिल अपने-अपने पेशा में सफ़ल होते गए। गद्यांश यह दिखाता है कि दोनों भाई ईश्वर की आराधना कर रहे हैं। कुछ लोगों का मत है कि दोनों भाइयों के बीच मुख्य अंतर उनकी भेंट जो उन्होंने परमेश्वर को चढ़ाई, में है: **कैन यहोवा के पास भूमि की उपज** (अनाज/फल इत्यादि) में से कुछ भेंट ले आया जबकि **हाबिल भी अपनी भेड़-बकरियों के कई एक पहलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने** ले आया। वचन इस संबंध में कुछ भी नहीं बताता है कि परमेश्वर इस समय किस प्रकार की भेंट को अधिक पसंद करता है। वचन केवल इतना बताता है कि दोनों यहोवा के लिए भेंट (מִנְחָה, *मिनखाह)* लाए। बाद में यहूदी इतिहास में यह शब्द प्राथमिक रूप से उपयुक्त आटा या अन्न की भेंट के लिए प्रयोग किया गया है (लैव्य. 2:1-3, 14-16),[10] परंतु इसमें जानवरों की भेंट भी संभवतः शामिल है (1 शमूएल 2:17)।

तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया। परमेश्वर के दृष्टि में हाबिल की भेंट कैन की भेंट से अधिक मूल्यवान क्यों थी, इसके पीछे मुख्य बात समझने की यह है कि भेंट में प्रस्तुत किए गए "भेड़ बकरियों के पहलौठे और उनकी चर्बी" का होना है। मूसा की व्यवस्था के अनुसार फ़सल का पहला फल (निर्गमन 23:16-19; 34:22-26; लैव्य. 2:14), जानवरों के पहलौठे (निर्गमन 13:11-13; 22:29, 30; 34:19, 20) और उनकी चर्बी (निर्गमन 29:13; लैव्य. 3:3-5; 4:8-10; 7:23-25) एक विशेष रूप से परमेश्वर की हैं। यह निर्धारित करना यहाँ कठिन होगा कि क्या परमेश्वर ने मानव जाति को इतिहास की इस घड़ी में बलिदान चढ़ाने के लिए कोई निर्देश दिया था कि नहीं। फिर भी हाबिल ने परमेश्वर के

द्वारा अपने पशुओं पर दी गई आशीषों के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया और इसको उसने अपने पशुओं में सबसे उत्तम पशु को बलि चढ़ाने के द्वारा प्रकट किया। कैन ने संभवतः कुड़कुड़ाते हुए परमेश्वर को बलि चढ़ाई होगी, हो सकता है कि उसने सर्वोत्तम अपने लिए रख छोड़ा होगा और बचा हुआ परमेश्वर को भेंट देने के लिए लाया होगा।

उत्पत्ति का वृतांत यह नहीं बताता है कि परमेश्वर ने हाबिल की भेंट क्यों स्वीकारा और कैन की भेंट का क्यों तिरस्कार किया। वृत्तांत अति संक्षिप्त है और बहुत कम विवरण प्रस्तुत करता है; फिर भी, परमेश्वर के प्रति उनका दृष्टिकोण, स्वयं के प्रति दृष्टिकोण और अपने संपत्ति के प्रति उनका दृष्टिकोण अलग अलग था। इब्रानियों की पत्री का लेखक इसको स्पष्ट करता है जब उसने लिखा, "विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उस की भेंटों की गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है" (इब्रा. 11:4)।

इस वाक्यांश से कि परमेश्वर ने हाबिल के भेंट को स्वीकारा परंतु उसने कैन के भेंट को नहीं स्वीकारा, से हम कुछ तथ्यों पर विचार कर सकते हैं। (1) जबकि दोनों भाइयों ने परमेश्वर पर विश्वास किया और दोनों ने उसकी उपासना की, लेकिन हाबिल का परमेश्वर के प्रति विश्वास (परमेश्वर के प्रति समर्पण) अधिक था और कैन का विश्वास ऐसा नहीं था। (2) जबकि दोनों भाइयों ने परमेश्वर को भेंट चढ़ाई लेकिन हाबिल की भेंट प्रथम और सर्वोत्तम होने के कारण कैन की भेंट से अलग थी, संभवतः कैन प्रथम और सर्वोत्तम अपने लिए रखना चाहता था। यदि वह अपनी महिमा चाहता था तो वह परमेश्वर को महिमा नहीं दे रहा था। परमेश्वर, मनुष्य का न केवल बाहरी व्यवहार देखता है परंतु वह उनके मन के दृष्टिकोण को भी जांचता है और वह मनुष्य के इरादे को भी आराधना में देखता है। वचन में हमें यह भी पढ़ने को मिलता है कि परमेश्वर आराधक से, जो उसको प्रसन्न करना चाहता है, उसकी आज्ञाकारिता और खरा हृदय भी चाहता है (देखें 1 शमूएल 15:22; होशे 6:6; मीका 6:8; मत्ती 5:24; 23:23)।

कैन का क्रोध उसके मन की सच्ची स्थिति का वर्णन करता है। वास्तव में वचन यह कहता है कि **कैन अति क्रोधित हुआ**, और शब्द अति מְאֹד *(मेओद)* उसकी भावनाओं की गंभीरता दर्शाता है; कैन क्रोध से जलने लगा। उसी तरह का दूसरा इब्रानी शब्द उत्पत्ति 34:7 में पाया जाता है जब याकूब के पुत्रों ने सुना कि उनकी बहन दीना के साथ शकेम ने दुष्कर्म किया है। इस प्रकार के क्रोध पर यदि नियंत्रण न किया जाए, तो वह हत्या करने के लिए प्रेरित करता है, जैसे कि हम इन दोनों घटनाओं में देखते हैं।

कैन के क्रोध के साथ, वचन यह बताता है कि उसके **मुँह पर उदासी छाई हुई** थी, जिसका शाब्दिक अर्थ भी यही है या फिर उसका चेहरा में दुःख झलक रहा था (देखें अय्यूब 29:24)। इस स्थिति में कैन खतरनाक इरादे में था और इसे परमेश्वर भली भांति जानता था।

नए नियम में कैन को "बुरे व्यक्ति" (शैतान) के रूप में संबोधित किया गया है क्योंकि वह अपने भाई से घृणा करता था और उसने उसकी हत्या की। ऐसा करने का कारण यह था कि कैन के "कार्य बुरे थे और उसके भाई के कार्य धर्म के थे" (1 यूहन्ना 3:11-15)। हत्या, कैन के पाप का आरंभ नहीं है; उसने हाबिल की हत्या की क्योंकि "उसके कार्य बुरे थे।" घृणा और ईर्ष्या ने उत्पत्ति 4:8 की घटनाओं को अंजाम दिया। इसलिए, परमेश्वर का हाबिल की भेंट को ग्रहण करना और कैन की भेंट का इनकार करना, कैन के मन में पनप रही अग्नि की ज्वाला का अंतिम चरण था। यह उसके भाई के हत्या में बदल गया।

आयत 6. तब यहोवा ने कैन से कहा, "तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है?" परमेश्वर ने जिस तरह आदम और हव्वा से उत्पत्ति 3:9-13 में प्रश्न पूछा उसी तरह कैन से प्रश्न पूछकर उसने अपने धीरज तथा प्रेम का परिचय दिया। हमें ध्यान रखना है कि परमेश्वर का प्रश्न पूछने का तात्पर्य सूचना एकत्रित करना नहीं है क्योंकि वह तो पहले ही जानता था कि कैन क्रोधित क्यों है और उसका चेहरा क्यों उतरा हुआ है। परमेश्वर उसके मन के दृष्टिकोण को जांचना चाहता था। यदि वह अपने पाप को मान लेता तो संभवतः वह पश्चाताप कर लेता। परमेश्वर, हाँ, यह जानता था कि यदि बड़े भाई का अपने छोटे भाई के प्रति ईर्ष्या और परमेश्वर के प्रति घृणा को जांचा नहीं जाता है तो वह उसे उससे भी बड़े पापों को करने के लिए उकसायेगा: उसके भाई की हत्या। किंतु, जैसे कि उसके माता पिता के साथ हुआ, कैन के साथ भी वैसा ही हुआ: पाप उसने नहीं स्वीकारा और न ही उसने अपने हृदय का परिवर्तन किया; क्रोधित कैन नाराज़ रहा और उसने परमेश्वर के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

आयत 7. यह आयत कई कठिन व्याकरण संबंधी प्रश्न प्रस्तुत करता है। 250 ई.पू. से LXX के अनुवाद के साथ ही कुछ विद्वानों ने अनुच्छेद को बदला और उसे पुनः लिखने का प्रयास किया है; और यह अभ्यास आज भी जारी है। इसके अनुवाद संबंधी तकनीक पर चर्चा करना इस टीका से बाहर की बात है। यहां यह कहा जा सकता है कि NASB का अनुवाद लेखक के मूल उद्देश्य के निकट है: **"यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी?" या तेरा चेहरा क्यों झुका रहेगा?** हालांकि तेरा चेहरा जैसा शब्दांश आयत 7 में नहीं पाया जाता है, लेकिन इस बात का आशय यहाँ पर निहित है क्योंकि यह आयत 5 और 6 के कैन के उदास चेहरा का प्रतिबिंब है। यदि कैन अच्छा करता और उसका दृष्टिकोण अच्छा होता तो उसका चेहरा उठा हुआ होता जिसका यह तात्पर्य होता है कि परमेश्वर के सम्मुख बिना शर्म के उसका विवेक शुद्ध है।

परमेश्वर ने कैन को **पाप** के संबंध में चेतावनी दी जो इस प्रकार दर्शाया गया कि उसको दबोचने के लिए वह तो **दरवाजे पर दुबका हुआ है**। दुबका רֹבֵץ *(रावात्स)*[11] "लटघात लगा कर बैठना" (NRSV), जंगली जानवर के समान अपने शिकार पर झपटने से पहले तैयार होने के लिए प्रयोग किया गया है। जबकि पाप कैन पर प्रबल होना चाहता था तौभी उसको उसका सामना करना चाहिए था। परमेश्वर ने उसे चिताया कि उसको उस पर प्रभुत्व प्राप्त करना है।

कैन ने पहले से अपने भाई की हत्या की योजना नहीं बनाई थी क्योंकि उसको स्वतंत्र इच्छा प्रदान की गई थी और उसके सामने यह तथ्य स्पष्ट था कि वह चाहे तो इस वर्तमान मार्ग में खड़ा रहे या फिर उसे छोड़ दे। वह पूरी तरह से इस निर्णय से वंचित नहीं था या फिर पाप के गहरे दलदल में नहीं धंसा था - चाहे वह आनुवंशिक या फिर वास्तविक हो - कि उसके पास कोई दूसरा रास्ता ही नहीं था। इसके विपरीत, उसके सम्मुख दो बातों में चुनाव करने की स्वतंत्रता थी और उसकी यह ज़िम्मेदारी बनती थी कि वह ठीक रास्ते का चुनाव करे; वह सम्पूर्ण मन से परमेश्वर का अनुमोदन करे, इसके बजाय कि वह अनाज्ञाकारी रहे और परमेश्वर और अपने भाई के प्रति बुरा दृष्टिकोण रखे। परमेश्वर का वक्तव्य कि "यदि तू भला करे ... ," और कैन भला करके परमेश्वर उसका प्रत्युत्तर नहीं देता तो यह निरर्थक ठहरता। आगे, इस बात पर ज़ोर दिया है कि कैन को पाप का सामना करने की ज़िम्मेदारी थी, यहाँ प्रयुक्त सर्वनाम से विदित है जो परमेश्वर ने उसको आरंभ में ही दे दिया था। इब्रानी भाषा का शाब्दिक अर्थ यह है कि "... तुझे, इस पर प्रभुता प्राप्त करना है।"

कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या की (4:8-16)

8तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा और जब वे मैदान में थे, तब कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़ कर उसे घात किया। 9तब यहोवा ने कैन से पूछा, "तेरा भाई हाबिल कहां है?" उसने कहा, "मालूम नहीं: क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?" 10उसने कहा, "तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लहू भूमि में से मेरी ओर चिल्ला कर मेरी दोहाई दे रहा है! 11इसलिये अब भूमि जिसने तेरे भाई का लहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह खोला है, उसकी ओर से तू शापित है। 12चाहे तू भूमि पर खेती करे, तौभी उसकी पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी, और तू पृथ्वी पर भटकनेवाला और भगोड़ा होगा।" 13तब कैन ने यहोवा से कहा, "मेरा दण्ड सहने से बाहर है। 14देख, तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से निकाला है और मैं तेरी दृष्टि की आड़ में रहूंगा और पृथ्वी पर भटकनेवाला और भगोड़ा रहूंगा; और जो कोई मुझे पाएगा, मुझे घात करेगा।" 15इस कारण यहोवा ने उससे कहा, "जो कोई कैन को घात करेगा उससे सात गुणा पलटा लिया जाएगा।" और यहोवा ने कैन के लिये एक चिन्ह ठहराया ऐसा न हो कि कोई उसे पाकर मार डाले। 16तब कैन यहोवा के सम्मुख से निकल गया, और नोद नाम देश में, जो अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा।

आयत 8. परमेश्वर के चेतावनी के बावजूद, कैन ने अपने आपको पाप करने से नहीं रोका। कैन का अति क्रोधित होना और परमेश्वर का वर्णन कि उसकी भेंट क्यों नहीं स्वीकार की गई और उसके भाई की क्यों स्वीकार की गई, ने उसे और भी ईर्ष्यालु बना दिया।

आयत 8 इस प्रकार प्रारंभ होता है, **तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ**

कहा। इब्रानी लेख इस संबंध में कुछ भी नहीं कहता है कि कैन ने हाबिल से क्या कहा। LXX तथा अन्य प्राचीन अनुवादों के आधार पर NIV में ऐसा लिखा हुआ है, "आओ हम मैदान की ओर चलें"; लेकिन ये शब्द केवल अनुमान ही है। क्या कैन ने हाबिल को बाहर मैदान में जाने के लिए धोखा दिया या फिर घर में ही प्रारंभ विवाद ने उनको बाहर मैदान में जाने के लिए मजबूर किया जो मैदान में भी जारी रहा, हमें इस संबंध में कुछ भी नहीं कहा गया है। वचन केवल इतना बताता है कि **कैन ने अपने भाई हाबिल पर चढ़ कर उसे घात किया।** "घात किया" के लिए इब्रानी शब्द הָרַג *(हारग)* प्रयोग किया गया है, जिसका सामान्य प्रयोग विद्रोह करके जानबूझकर की गई हत्या करना होता है जैसे लेवी और शिमौन ने शकेम के व्यक्तियों को मारने के लिए किया (उत्पत्ति 34:25, 26) या ईजेबेल ने परमेश्वर के दासों को मारने के लिए किया (1 राजा 18:13)।

आयत 9. एक बार फिर से **परमेश्वर** ने कैन से पूछा, **"तेरा भाई हाबिल कहाँ है?"** पहले की भांति यह प्रश्न उसे कायल करने के लिए था और यह किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए नहीं था; यह तो बड़े भाई को अपने अंदर झांककर देखने के लिए था कि वह जाने कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है। क्या उसके अंदर किसी प्रकार का पछतावा या ईश्वरीय भय नहीं था? स्पष्ट रूप से नहीं, क्योंकि कैन ने सिरे से इनकार कर दिया: **"मैं नहीं जानता; क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?"** आदम ने भी दोष दूसरे पर डालते हुए हिचकिचाहट के साथ अपना पाप स्वीकार किया। कैन ने झूठ बोलकर परमेश्वर के प्रश्न को टालना चाहा कि उसका उसके भाई के प्रति कोई ज़िम्मेदारी है: "क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?"

कैन ने भी मनाने वाला प्रश्न पूछा, जिसका उत्तर वह न में चाहता था। जब उसको उसके भाई के बारे में पूछा गया तो उसका चिड़चिड़ापन प्रकट था। "रखवाला" שֹׁמֵר *(शामर)* जैसे शब्दों का प्रयोग यह बताता है कि कैन ने अपने भाई के प्रति किसी भी प्रकार की ज़िम्मेदारी से इनकार किया। बाइबल में "रखना" जैसे शब्दों के प्रयोग से तात्पर्य है कि संदर्भ के अनुसार किसी की देखभाल करना, सुरक्षा प्रदान करना, संभालना, नियंत्रण में रखना, नियमित करना और संपत्ति, जानवरों और लोगों पर प्रभुता जताना है (3:24 की टीका देखें)।[12] बेशक, परमेश्वर अपने लोगों का सबसे बड़ा रखवाला, जो न तो सोता है और न ऊँघता है (भजन 121:4-8)। माता पिता स्वाभाविक रूप से अपने बच्चों की देखभाल करते हैं और उन्हें किसी प्रकार के खतरों से बचाकर रखते हैं। घर के बड़े भाइयों से यही अपेक्षा की जाती है कि वे अपने से छोटे बच्चों का ध्यान रखें। कैन में इस प्रकार का कोई भी गुण नहीं था; हाबिल के तुलना में वह स्वाभाविक प्रेम से रहित था। इसलिए, जब परमेश्वर ने उसे उसके भाई के बारे में पूछा तो उसने झूठ बोल दिया। वह हाबिल को लेकर अस्पष्ट तथा निरपेक्ष था।

आयत 10. परमेश्वर ने कैन के प्रश्न को उत्तर देकर सम्मानित नहीं किया बल्कि उसने उसके कायरतापूर्ण कार्य का सामना यह पूछकर किया, **"तू ने यह क्या किया है?"** यद्यपि यह प्रश्न का स्वरूप है लेकिन वास्तव में यह एक

दोषारोपण है क्योंकि परमेश्वर उसके भाई के बारे में जानकारी नहीं प्राप्त करना चाहता था। परमेश्वर, कैन से एक और छलपूर्ण उत्तर नहीं चाहता था बल्कि उसने उस हत्या से संबंधित एक गवाह प्रस्तुत करके उसे अचंभित किया, **"तेरे भाई का लहू भूमि में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है।"** इब्रानियों के लेखक ने हाबिल के बारे में कुछ मिलती जुलती बातों के बारे में गवाही दी है, "वह मरने पर भी अब तक बातें करता है" (इब्रा. 11:4)। प्राचीनकाल के लोग यह मानते थे कि मनुष्य का लहू जो भूमि पर गिरता है मानो वह ऐसा पुकारता है जैसे वह बातचीत कर रहा हो ताकि हत्यारे को दण्ड दिया जा सके।

अय्यूब का परमेश्वर के विरूद्ध भटकाने वाली पुकार[13] में कुछ इसी तरह का अभिव्यक्ति पाई जाती है, जिसको उसने हत्यारा करके दोषी ठहराया: "हे पृथ्वी, तू मेरे लहू को न ढांपना, और मेरी दोहाई कहीं न रुके" (अय्यूब 16:18)। हालांकि, वह परमेश्वर नहीं बल्कि शैतान उसको सता रहा था; लेकिन उसके पास ऐसा कोई माध्यम नहीं था जिससे वह इसको जान सके, क्योंकि परमेश्वर ने उस पर यह नहीं प्रकट किया था। फिर भी यह बात यह बताती है कि प्राचीनकाल से ही लोगों का यह मानना था कि निर्दोष का लहू उसके हत्यारे के विरूद्ध भूमि से पुकारता है। इब्रानियों की पत्री का लेखक घोषित करता है कि यीशु का लहू "हाबिल के लहू से उत्तम बातें कहता है" (इब्रा. 12:24)। हाबिल का लहू केवल बदला लेने के लिए पुकारता है; लेकिन यीशु का लहू पापों से और सभी अधार्मिकता के अपराधों से छुटकारे के लिए है। यह बदले के बजाय क्षमादान प्रदान करता है और इसीलिए यह खोए हुओं के लिए उत्तम संदेश है।

आयत 11. अपने माता पिता के समान कैन ने अपने पाप से पश्चाताप नहीं किया और क्षमादान के लिए विनती नहीं की। उसको यह सीखना था कि कार्य परिणाम लाता है और वह अपने भाई का जीवन बिना दण्ड के नहीं ले सकता था। वास्तव में पाठक यह जानकर आश्चर्यचकित होता है कि परमेश्वर ने कैन को उसके बुरे कार्य के लिए नहीं मारा। बाद में, हालांकि, परमेश्वर ने जान बूझकर की गई हत्या के अपराध में हत्यारे को मृत्युदण्ड दिए जाने का प्रावधान रखा (उत्पत्ति 9:6; निर्गमन 21:12-14)। फिर भी जैसे आदम और हव्वा को मृत्युदण्ड की चेतावनी देकर अनुग्रह के द्वारा दर्द भरी जिंदगी जीने की अनुमति दी गई, उसी तरह कैन का भी दण्ड था। वह मृत्युदण्ड के योग्य था, लेकिन परमेश्वर का अनुग्रह उस पर हुआ और उसे जीने दिया गया जबकि **भूमि उसके लिए शापित ठहरी** जिस पर वह निर्भर हुआ करता था। इस भूमि ने **तेरे भाई का लहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह खोला है**।

आयत 12. एक अर्थ यह है कि उसके पैरों तले **भूमि** मर चुकी थी **ताकि आगे को उसके लिए अब वह फसल न उगाए**। अब वह उस भूमि की उपज का आनंद आगे नहीं उठा पाएगा जिस पर वह खेती बाड़ी किया करता था।

भूमि के विरूद्ध न्याय कैन के लिए बड़ी चिंता का विषय था। वह भूमि की उपज परमेश्वर के लिए भेंट स्वरूप लाया था (4:3)। जिस काम का वह आनंद उठाया करता था, अब वह नहीं कर सकता था या फिर जीवन भर उसको भूमि

से भगा दिया गया जिस पर खेती करने में वह आनंद उठाया करता था (4:14)।

अपने पाप के कारण, कैन, धरती पर भूमि हीन और बेघर, **भटकनेवाला और भगौड़ा बन गया**। कैन का अनुभव इस्राएलियों के अविश्वास, अनाज्ञाकारिता और परमेश्वर के विरूद्ध बलवे के कारण जंगल में चालीस वर्ष तक भटकने का पूर्व सूचक बन गया था (गिनती 14:33, 34; व्यवस्था. 2:14, 15)। कैन को उस धरती से निकालना, इस्राएलियों के इतिहास के समान्तर बन गया जब परमेश्वर के लोगों को बलपूर्वक वहाँ से निकाल दिया गया और फिर अपने पाप तथा मूर्तिपूजा के कारण, बन्धुआई में ले जाया गया (लैव्य. 18:24-29; 26:31-35; व्यव. 28:63-65)।

दूसरे शब्दों में, कैन अपने चुने हुए नरक में चला गया, यदि वह अपने परिवार में शान्तिपूर्ण तरीके से नहीं रह सका तो उसको बिना परिवार के ही रहना पड़ रहा है। वह समाज के लिए खतरनाक बन गया, इसलिए उसे अब समाज के बिना रहना पड़ रहा है। उसी तरह, जब कैन, परमेश्वर को अपने जीवन में नहीं चाहता था, तो परमेश्वर उसे ज़बरदस्ती अपने या अपने लोगों के साथ संगति में नहीं रहने देना चाहता था। इस अवधारणा को नए नियम में और भी अधिक विकसित किया गया: अंतिम न्याय के बाद, जो अपने आपको परमेश्वर के प्रेम और संगति से दूर रखते हैं वे उसके और उसके छुड़ाए हुओं की उपस्थिति से अलग रखे जाएंगे (मत्ती 8:11, 12; 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10)।

आयतें 13, 14. कैन ने **यहोवा** को यह उत्तर दिया, **"मेरा दण्ड सहने से बाहर है।"** उसके प्रत्युत्तर में अपने भाई की हत्या के संदर्भ में किसी प्रकार का पश्चाताप नहीं दिखाई दे रहा था बल्कि केवल आत्मदया तथा परमेश्वर के प्रति आक्रोश दिखाई दे रहा था। कैन ने शिकायत की कि **उसकी सज़ा कि वह पृथ्वी पर भटकनेवाला और भगोड़ा होगा,** उसके लिए बहुत अधिक थी। ऐसा लगता है कि मानो कैन यह कह रहा हो, "तूने मेरे माता पिता को अदन की वाटिका से बाहर खदेड़ा लेकिन मेरा भविष्य तो इससे भी बुरा लगता है क्योंकि मुझे धरती पर कहीं भी बसने की स्थान नहीं होगी। इसके साथ ही, तूने मेरे पिता के धरती पर फसल उगाने में उसकी मेहनत और परिश्रम को बढ़ाया, लेकिन तूने तो मुझे उपजाऊ भूमि से पूरी तरह हटा दिया है और तूने मुझे भटकनेवाला और भगोड़ा बना दिया है। इससे भी बुरी बात तो यह है कि मैं अब तेरे सम्मुख भी नहीं आ सकता। आगे को अब तू मुझे न तो देखेगा और न ही मेरी कुछ चिंता उस तरह करेगा जैसे तूने मेरे माता पिता और भाई का अदन से हटा दिए जाने के बाद भी किया था।" यहाँ दुखद बात यह है कि अब तक कैन, स्पष्ट रूप से परमेश्वर की उपस्थिति से अप्रसन्न था और उसने यह अपने जीवन में ईश्वरीय हस्तक्षेप के रूप में देखा। अब उसको ज्ञात हुआ कि वह क्या खो रहा है - लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है। उसने असहाय अनुभव किया और कहा, **"जो कोई मुझे पाएगा, मुझे घात करेगा।"** परमेश्वर से अलगाव ने कैन को दूसरे लोगों से डर का अनुभव कराया जो उसको नुकसान पहुँचा सकते थे।

कैन की चिंता से यह विदित होता है कि उस समय संसार में कई अन्य लोग

रहते थे। इस बात का प्रमाण उसके विवाह् करने और एक नगर बसाने से पता चलता है (4:17)। संभवतः उसने सोचा कि कोई “लहू का प्रतिशोध” लेगा और हत्यारे को मार डालेगा। उत्पत्ति के लेखक ने समय सीमा नहीं बांधी। उसने यह नहीं बताया कि आदम और हव्वा के अदन से निकाले जाने के कितने समय बाद कैन और हाबिल पैदा हुए और न ही उसने यह बताया कि बड़े भाई द्वारा छोटे भाई की हत्या के बाद कितना समय बीत चुका था। न ही इसके बारे में कोई वर्णन है कि हत्यारे को किससे डर लगता था या फिर उसको पत्नी कहाँ से मिली। आदम और हव्वा के और भी बच्चे, लड़के तथा लड़कियाँ हुए (4:25; 5:4), लेकिन इन बच्चों की वंशावली नहीं दी गई है। कैन की पत्नी जो उसके “लहु का प्रतिशोध” ले सकती थी, एक ही कुटुम्ब के सदस्य होंगे - सब आदम और हव्वा की वंशज (3:20; प्रेरितों 17:26) - लेकिन प्रथम जोड़े को बाग का अपना मूल निवास छोड़े हुए कितना समय बीत गया था इसकी कोई जानकारी नहीं है। लेखक का उद्देश्य इन सब घटनाओं का वास्तविक क्रमानुसार वर्णन देना नहीं था। उसका केन्द्र तो मानव की वर्तमान अवस्था तथा पाप में पतन की कहानी पर था जिसमें मनुष्य, परमेश्वर से दूर और अति दूर होते गए और इन सब बातों ने अन्त में किस प्रकार बाढ़ को न्यौता दिया।

आयत 15. कैन ने विवाद किया कि उसका दण्ड असहनीय है लेकिन यह आयत इसका उलट बताती है। **परमेश्वर** ने उसके न्याय की सीमा न केवल बांधी थी परंतु उसने अपना अनुग्रह, प्रतिज्ञा के वचन और इस अपश्चातापी पापी की सुरक्षा के वचन के द्वारा पूरा किया। परमेश्वर ने कहा, **“जो कोई कैन को घात करेगा उससे सात गुणा पलटा लिया जाएगा।”** “पलटा” נָקַם *(नाकाम)* शब्द, पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा उसके शत्रुओं को दिए गए दण्ड के बारे में प्रयोग किया गया है या फिर यह उसके अपने लोगों पर प्रयोग किया गया है जो जानबूझकर उसकी वाचा के विरूद्ध पाप करते हैं।[14] इस सिद्धांत का उत्कृष्ट अभिव्यक्ति यह है, “पलटा लेना और बदला लेना मेरा ही काम है, यह उनके पांव फिसलने के समय प्रगट होगा; क्योंकि उनकी विपत्ति का दिन निकट है, और जो दुःख उन पर पड़ने वाले है वे शीघ्र आ रहे हैं” (व्यव. 32:35, 41; देखें रोमियों 12:19)।

यदि परमेश्वर पाप या दुष्टता के प्रति केवल इशारा करता और दुष्ट को दण्ड दिए बिना छोड़ दे तो वह अपनी पवित्रता और न्याय के गुण के प्रति सत्य नहीं ठहरता। जब परमेश्वर ने मनुष्य तथा राष्ट्र के प्रति अस्थाई न्याय किया तो इसे परमेश्वर का “पलटा लेने के दिन” कहा गया (यशा. 34:8; 61:2; 63:4; देखें 35:4; 47:3)। हालांकि, मूसा की व्यवस्था के अधीन व्यक्तिगत संबंध में परमेश्वर के लोगों को दुष्टों से पलटा लेने की अनुमति नहीं थी। परमेश्वर ने मूसा को इस्राएलियों को यह बताने के लिए निर्देश दिया, “पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने समान प्रेम रखना; मैं यहोवा हूं” (लैव्य. 19:18)। ऐसा प्रतीत होता है कि कैन के कहानी में हत्यारे के प्रति इसी प्रकार का दृष्टिकोण अपनाया गया है।

"लहू का प्रतिशोध" की अवधारणा, परिवारों या कुलों के मध्य "कुल बैर" से नहीं है जैसे कि कुछ समय पूर्व विभिन्न लोगों के मध्य देखने को मिला था। एक कबायली समुदाय में परमेश्वर न्याय प्रणाली स्थापित कर रहा था जहाँ दुष्ट को दण्ड देने के लिए कोई केन्द्रीय प्रणाली नहीं थी। हत्या की घटना में, मृतक के निकटतम संबंधी हत्यारे को दंड सुनाते थे। शरणनगर की स्थापना इसी व्यवस्था का अभ्यास है; इसमें दुर्घटना में मारा जाना और हत्या करना, में अंतर है जिसमें असावधानी बरतने के कारण मारे गए लोगों के अपराध में सामान्य दण्ड देने का प्रावधान था (गिनती 35:9-28)।[15]

जब परमेश्वर ने यह घोषणा की कि कैन के हत्यारे से "सात गुना पलटा" लिया जाएगा तो इसमें यह अस्पष्ट है कि क्या कैन का हत्यारा और उस परिवार के छः और सदस्य मारे जाएंगे या फिर परमेश्वर, कैन से लेकर सात और पीढ़ियों को दण्ड देगा। हो सकता है कि यह आलंकारिक कविता की पंक्ति के समान हो जो संभवतः ईश्वरीय पलटा लेने की पूर्णता को दर्शाता हो। संख्या "7" पवित्र संख्या है जो वचन में अक्सर इसी संदर्भ में प्रयोग की गई है (लैव्य. 26:24, 25; भजन 12:6; 79:12; नीति. 6:31)।

अनुग्रह के कारण ही **परमेश्वर ने कैन के लिए एक चिह्न** ठहराया। यह उस पर श्राप नहीं था; यह तो प्रतिशोधी समाज में उसके सुरक्षा को सुनिश्चित करना था। वास्तव में, जब मनुष्य इसे देखते तो वे जान लेते कि वह तो ईश्वरीय शरण में है और उन्हें **उसकी हत्या** नहीं करनी है। अतः इस "चिह्न" אות *(ओथ)* को दृष्टिगत होना चाहिए था। हो सकता है कि यह उसके चेहरे या माथे की त्वचा पर गुदा हुआ किसी प्रकार का चिह्न था। इस चिह्न ने उसे धरती पर सामान्य अवधि तक जीने की सहायता की।

आयत 16. इस कहानी की दर्दनाक कथानक यह है कि यह दो भाइयों का परमेश्वर की आराधना करने के प्रयास से प्रारंभ होती है। जब **कैन** ने ईर्ष्या तथा क्रोध में आकर हाबिल की हत्या की तो अपश्चातापी हत्यारे ने **परमेश्वर की उपस्थिति** को छोड़ दिया। इस प्रकार उत्पत्ति के लेखक ने कैन का परमेश्वर से अलग होकर जीवन जीने का वर्णन किया है और क्यों **वह नोद नाम देश में, जो अदन के पूर्व की ओर है, रहने लगा**। נוד *(नोद)* का शाब्दिक अर्थ दुःखभरे जीवन में "भ्रमण करना" होता है।[16] यह किसी विशेष स्थान की ओर संकेत नहीं करता है, हो सकता है कि यह एक भौगोलिक क्षेत्र की ओर संकेत करता है जो "अदन की पूर्व" की ओर है (वह आवास जिसे परमेश्वर ने मूल रूप से मनुष्य के निवास के लिए ठहराया था), जहाँ यह व्यक्ति जिसने परमेश्वर के निर्देश को नकारा था ईश्वरीय न्याय के साथ "पृथ्वी पर भटकनेवाला और भगोड़ा होकर रह सके" (4:14)।

दो वंशावलियाँ (4:17-26)

कैन का परिवार तथा संस्कृति का प्रारंभ (4:17-24)

[17]जब कैन अपनी पत्नी के पास गया तब वह गर्भवती हुई, और उसने हनोक को जन्म दिया; फिर कैन ने एक नगर बसाया और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रखा। [18]हनोक से ईराद उत्पन्न हुआ, और ईराद से महूयाएल उत्पन्न हुआ, और महूयाएल से मतूशाएल, और मतूशाएल से लेमेक उत्पन्न हुआ। [19]लेमेक ने दो स्त्रियाँ ब्याह लीं: जिनमें से एक का नाम आदा, और दूसरी का सिल्ला था। [20]आदा ने याबाल को जन्म दिया। वह तम्बुओं में रहना और पशु-पालन इन दोनों रीतियों का प्रवर्तक हुआ। [21]और उसके भाई का नाम यूबाल था; वह वीणा और बाँसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का प्रवर्तक हुआ। [22]और सिल्ला ने भी तूबल-कैन नामक एक पुत्र को जन्म दिया, वह पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेवाला हुआ। तूबल-कैन की बहिन नामा थी। [23]और लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा, "हे आदा और हे सिल्ला, मेरी सुनो; हे लेमेक की पत्नियो, मेरी बात पर कान लगाओ, मैंने एक पुरुष को जो मुझे चोट लगाता था, अर्थात् एक जवान को जो मुझे घायल करता था, घात किया है। [24]जब कैन का बदला सातगुणा लिया जाएगा, तो लेमेक का सतहत्तर गुणा लिया जाएगा।"

आयत 17. हालांकि कैन ने अपने भाई को घात किया और वह ईश्वरीय न्याय के आधीन था, फिर भी परमेश्वर ने संसार को बढ़ाने की अपनी योजना को त्यागा नहीं। उत्पत्ति की पुस्तक इस विषय में कुछ नहीं बताती कि कैन ने किस से विवाह किया या वह विवाह कब सम्पन्न हुआ। हो सकता है कि उसकी पत्नी 5:4 में वर्णित आदम की बेटियों में से एक हो (देखें 3:20; प्रेरितों 17:26)। जब संसार में लोग कम थे, तो भाई बहनों में विवाह होना आवश्यक था। यहाँ तक की कई पीढ़ी बाद भी अब्राहम ने अपनी सौतेली बहन से विवाह किया (20:12)। फिर भी जैसे जैसे लोग पृथ्वी पर बढ़ने लगे, यह आवश्यक नहीं रहा, और मूसा की व्यवस्था के अनुसार इस प्रथा को घृणित ठहरा दिया गया (लैव्य. 18:9)।

"फूलो-फलो और पृथ्वी को अपने वश में कर लो" की परमेश्वर की वास्तविक आशीष और आज्ञा पाप के अस्तित्व के बावजूद भी जारी रही। और जैसा आदम और हव्वा के बीच में था, वैसे ही **कैन भी अपनी पत्नी के पास गया और उसने गर्भवती होकर हनोक को जन्म दिया**। अगर पहले जोड़े के साथ तुलना की जाए (4:1), न ही कैन और न ही उसकी स्त्री ने अपने बेटे हनोक के जीवन में परमेश्वर के कार्य का वर्णन किया। दी गई वंशावली में उन्होंने जिस वंश को उत्पन्न किया उनके जीवन में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं थी।

"एनोक" का पद (जिसे हनोक भी कहा गया है) उत्पत्ति में कई बार वर्णित

हुआ है, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति जो आदम और हव्वा से उत्पन्न हुए और इस नाम को धारण किया, वे कैन के पुत्र और शेत के वंश में काफी बाद में उत्पन्न हुए (5:18-24)। असल में, "हनोक" नाम का वास्तविक अर्थ अज्ञात है परन्तु जो शब्द उत्पत्ति में वर्णित है उसे इब्रानी शब्द חָנַךְ *(चनाक)* से लिया गया है जिसका अर्थ है "प्रशिक्षित होना" या "समर्पित होना।" दूसरा अर्थ अधिक अर्थपूर्ण प्रतीत होता है क्योंकि कैन ने **एक नगर बसाया और ... अपने पुत्र के नाम पर "हनोक" रखा**।[17]

हालांकि परमेश्वर ने कैन को भगोड़ा करार दिया था, वह नोद नामक देश में बस गया (जिसका अर्थ है भटकने का देश; 4:16)। समयानुसार, उसने दिव्य आदेश के विपरीत एक नगर बसाया। यह भाग परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी जीवन व्यतीत करने की ओर इंगित करता है।

आयत 18. इसके बाद का ब्यौरा हनोक के चार वंशजों का वर्णन अनुक्रमिक रीति में करता है: **ईराद**, **महूयाएल**, **मतूशाएल**, और **लेमेक**। पहले तीन के विषय में उनके नाम के अलावा कोई और सूचना नहीं दी गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जिसका वर्णन किया जाए, सिवाय आदम से कैन के द्वारा वंशावली बढ़ाने की श्रृंखला की एक कड़ी होने के। लेखक शीघ्र ही चौथे व्यक्ति की ओर बढ़ता है, लेमेक जो आदम से सातवें पीढ़ी का था।

आयत 19. लेमेक के नैतिक पतन का पहला चिन्ह यह कथन है कि उसने दो स्त्रियों को ब्याह लिया: **आदा, और ... सिल्ला**। उसी के द्वारा एक से अधिक विवाह का चलन प्रारंभ हुआ। परमेश्वर की इच्छा का सृष्टि में से कूच करने का यही कारण था: "इसलिए पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा; और वे दोनों एक तन होंगे" (2:24)। एक बार फिर परमेश्वर का अनुग्रह सामने आता है: उसने न तो लेमेक को दोषी ठहराया और न ही उन पितरों को जिन्होंने इस प्रथा को आगे बढ़ाया। हालांकि यह स्पष्ट है कि ऐसी प्रथाओं का पालन करने और ऐसे अनैतिक जीवन को बिताने के कारण कई पीड़ादायक परिणामों का सामना करना पड़ा। बल्कि, पुराने नियम के अनुसार लोगों के जिस चित्रण को एक से अधिक विवाह करनेवालों को घरेलू कलह के कारण दुःख उठाने वालों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। एक तरह से यदि देखा जाए तो परमेश्वर ने मनुष्य को कठिन तरीके से इस बात को सीखने की अनुमति दी की जब एक व्यक्ति परमेश्वर द्वारा तय किए गए विवाह के तरीके को छोड़कर अपनी इच्छा से विवाह करता है तो उसका परिणाम क्या होता है।

आयतें 20-22. आदा और सिल्ला, दोनों के संयुक्त रूप से, चार बच्चे थे। आदा के दो बेटे थे, जबकि सिल्ला के एक बेटा और एक बेटी थी। प्रत्येक बेटे के लिए एक नाम दिया गया है, प्रत्येक के विवरण, व्यवसाय और सभ्यता के प्रति उनके योगदान समेत। जहां तक सिल्ला की बेटी, **नामा**, के बारे में कहा जाए तो वर्णन के योग्य कुछ भी नहीं कहा गया है; उसको किसी भी सांस्कृतिक उपलब्धि के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

आदा के द्वारा **याबाल** के जन्म को पहले वर्णित किया गया है, **और उसे**

तम्बुओं में रहने वालों और जानवरों को पालने वालों का पिता कहा गया हैं। इस संदर्भ में, "पिता" को एक शाब्दिक अर्थ में प्रयोग नहीं किया गया है, परन्तु आलंकारिक तौर से प्रयोग किया गया है। याबाल सभी तम्बुओं में रहने वाले खानाबदोश लोगों और पशु पालन करने वाले लोगों का संस्थापक था। यह कथन कुछ के द्वारा विरोधाभासी रूप में देखा जाता है विशेषकर हाबिल के संदर्भ में जिसे इससे पहले देखे गये पद में "भेड़-बकरी रखनेवाले" के रूप में देखा जा चुका है (4:2)। याबाल को कैसे इस व्यवसाय के प्रवर्तक के रूप में वर्णित किया जा सकता है? आलोचक इस तथ्य को अनदेखा कर रहे हैं कि हाबिल की भेड़-बकरियों को चित्रित करने के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द צֹאן *(सो न)* है, जो भेड़-बकरियों जैसे छोटे जानवरों के लिए प्रयोग किया गया है।[18] याबाल के कार्य की व्याख्या करने वाला शब्द מִקְנֶה *(मिकनेह)* है जिसमें "सभी चराये जाने वाले जानवरों को शामिल किया गया है, "जैसे कि" भेड़, बकरी, गाय-बैल, गदहे, और ऊंट (47:16, 17; निर्गमन 9:3)।[19] इसलिए, इस पाठ में कोई वास्तविक विरोधाभास मौजूद नहीं है।

यूबाल, आदा का दूसरा बेटा, **सभी प्रकार के "वीणा और बांसुरी"** [एनआईवी] **बजाने वालों का पिता कहलाया।** वह इन वाद्य यंत्रों को पुराने समय के बांस और तारवाले यंत्रों से विकसित किया गया है। "वीणा" एक तारवाला यंत्र होता है जिसे हाथ से बजाय जाता था (1 शमूएल 16:23), और "बांसुरी" शायद एक सरकंडे से बना यंत्र था जिसका पुराने नियम में केवल कुछ ही बार उल्लेख किया है, आम तौर पर वीणा के साथ इसे जोड़ा जाता था (अय्यूब 21:12; 30:31)।

तूबल-कैन, जो सिल्ला से उत्पन्न हुआ था, उस सभ्यता में धातु प्रौद्योगिकी का संस्थापक बन गया। **उसे पीतल और लोहे के सभी औजारों का गढ़ने वाला कहा गया है।** हालांकि, इस बात के विषय में कि, वह किसी भी धातु को "गढ़" सकता है, यह बात प्रारंभिक काल के मनुष्य के इतिहास में गलाने के विज्ञान के अस्तित्व की एक अधिक उन्नत कला की छवि का उदाहरण भी प्रस्तुत करती हैं। इब्रानी शब्द לָטָשׁ *(लतश)*, का एक और अधिक सटीक अनुवाद है जिसका बुनियादी अर्थ "पैनापन," "चोट करना," या "हथौड़ा" है।[20] इसके अलावा सामान्य तौर से प्रयोग किए जाने वाले शब्द जिसका अनुवाद "कांस्य" נְחֹשֶׁת *(चोशेथ)* किया गया है उसका अर्थ वास्तव में "तांबा" है,[21] जिसके साथ तूबल-कैन ने काम किया होगा। चौथे सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत या तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के प्रारम्भ तक तांबे को एक कठोर धातु बनाने के लिए टिन के साथ मिश्रित किया जाने लगा।

इसके अलावा, किसी को भी यह विचार नहीं मिलना चाहिए कि यह वाक्य "लोहे ... के औज़ार" इस बात को इंगित करता है कि इस प्रारम्भिक काल में परिष्कृत लौह उपकरण और हथियार प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। हालाँकि खनन और लोहे की गलाने की प्रक्रिया अनातोलिया में हित्तियों के मध्य में 1400 ई.पू. तक प्रारम्भ नहीं हुई थी, जो भी लोहा उपलब्ध था वह अधिकतर उल्काओं से

आया था। विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और उल्का विषयक लोहे के औज़ारों की खोज मिस्र और मेसोपोटामिया में की गयी थी जिनका तिथि निर्धारण तीसरी सहस्राब्दी ई.पू. के समय किया गया था। हालांकि यह सच है कि कुछ स्थलीय लोह वस्तुओं की खोज की गई थी, जिनमें पाये गये गिलट की मात्रा आदि कालीन पुरुष के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले उल्का विषयक लोहे की तुलना में कम थी। विशेषज्ञों के अनुसार इस प्रकार का लोहा "सोने को विशुद्ध करने की प्रक्रिया के लिए उपलब्ध था।"[22]

याबाल, यूबाल, और तूबल-कैन ने सभ्यता के लिए जो सांस्कृतिक योगदान दिये हैं वे प्रगति की ओर उठाये गये ज़बरदस्त कदम नहीं थे (कम से कम, आधुनिक मानकों के अनुसार)। फिर भी, बाइबलीय लेखक कुछ क्षेत्रों में प्रगति के लिए उन्हें ज़िम्मेदार ठहराते हैं। वे सांस्कृतिक कौशल और व्यवसायों के अग्रगामी और जनक थे जिनको विकसित किए जाने में दीर्घ अवधि लगी। संस्कृति और आविष्कार की प्रगति के साथ-साथ पाप की भी वृद्धि हुई। सभ्यता के बढ़ने से मनुष्य न तो एक बेहतर प्राणी बना था, न ही अपने पड़ोसी को अधिक सम्मान देने वाला, तथा न ही परमेश्वर के प्रति अपने हृदय में अधिक श्रद्धापूर्ण व्यवहार रखनेवाला बना।

कैन के वंश द्वारा की गई प्रगति न तो अपने आप में और न ही उनके लिए बुरी थी। वास्तव में, वस्तुओं की आशीषें और प्रतिभाएं जिनका इन व्यक्तियों ने उपयोग किया था वे अनुग्रहकारी सृष्टिकर्ता की ओर से उपहार था जिसकी रचना पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन को बेहतर बनाने के लिए की गयी थी। हालांकि, उपहार भी ठोकर का कारण बन सकता है। जितना अधिक मनुष्य ईश्वर प्रदत्त अपनी क्षमताओं के बल पर प्राप्त करता जाता है, उतना ही अधिक वह अभिमान से फूलने लगता है; और आगे जाकर वह अपनी उपलब्धियों के लिए महिमा पाने का इच्छुक होने लगता है और उसके जीवन में परमेश्वर के होने की आवश्यकता में कमी आने लगती है। संस्कृति, अपने आप से, लोगों को बेहतर व्यक्ति नहीं बना सकती है। यह उन्हें नैतिक रूप से ईमानदार नहीं बना सकती, न ही एक दूसरे की प्रति प्रेम रखने, या न ही परमेश्वर की प्रति आभारी और श्रद्धालु बनाती है। संस्कृति पाप की समस्या के साथ सम्बंधित नहीं है। जब तक जाँचा न जाए, पाप समाज में व्यवधान और विघटन का कारण बनता है। यह लेमेक के विरोधात्मक शब्द और आरंभ होती घटनाओं में स्पष्ट है।

आयत 23. दो **पत्नियों** को हासिल कर लेने से, **लेमेक** परमेश्वर द्वारा विवाह के लिए बनाई गयी मूल योजना से भटक गया और उसने **आदा और सिल्ला** को एक प्रतिस्पर्धक और अपमानजनक स्थिति में रख दिया। लेमेक हर उस व्यक्ति पर अपना कौशल और शासन स्थापित करना चाहता था जो कोई भी उसे हानि पहुंचा सकता था, और उसने अपने घमंड को इस बात के द्वारा प्रदर्शित किया कि उसकी पत्नियां उसकी बात सुने और [उसके] वचन पर ध्यान लगाये। उसके शब्दों को एक कविता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। हालांकि किसी भी हथियार का उसके भाषण में उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन अक्सर इसे

"तलवार के गीत" कहा जाता है। लेमेक का घमंड इस तथ्य पर आधारित हो सकता है कि उसके बेटे तूबल-कैन ने एक नई धातु का हथियार बनाया है और जिसके बनने से वह स्वयं को अजय महसूस कर रहा है।

अपने व्यंग्यपूर्ण गीत में, लेमेक अपनी पत्नियों के सामने डींग मारता है और कहता है, **"मैंने एक पुरुष को जो मेरे चोट लगाता था, अर्थात एक जवान को जो मुझे घायल करता था, घात किया है।"** यह कथन अनुवाद से सम्बन्धित कम से कम दो प्रश्नों को उठाता है। सबसे पहले, क्या लेमेक किसी के विरूद्ध एक चेतावनी जारी कर रहा था जो उस पर हमला कर सकता है, या वह एक घटना का वर्णन कर रहा था जो कि पहले से ही घट चुकी थी? इब्रानी भाषा में सबसे सटीक शब्द הָרַג *(हगार)* का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ कुछ समझते है कि "मैं मार डालूँगा [किसी को भी जो मुझे चोट पहुंचायेगा]।"[23] हालांकि, ज़्यादातर अंग्रेज़ी संस्करण NASB के साथ सहमत हैं और क्रिया का एकदम सटीक अनुवाद करते हैं ("मैंने घात किया" या "मार डाला") है।[24] इसका मतलब यह है कि लेमेक मात्र कातिल ही नहीं था, परन्तु वह एक दुष्ट व्यक्ति भी था जिसे अपने किए पर गर्व था।

दूसरा, क्या भाषा एक मनुष्य की हत्या का उल्लेख करती है या दो? क्योंकि यह उल्लेख है NASB के अनुसार, दो है, क्योंकि यह "एक पुरुष" और "एक लड़के" का वर्णन करता है। हालांकि, इस तरह के काव्य साहित्य में, दो पंक्तियों में एक समानता केवल एक ही व्यक्ति के वर्णन के लिए किया जा सकता है। "लड़के" के बजाय कई संस्करणों में יֶלֶד *(येलेद)* शब्द को "नौजवान" के रूप में अनुवाद किया गया है।[25] पुनरावृत्ति का उद्देश्य इस विचार का समर्थन करता है कि दोनों शब्द "पुरुष" और "नौजवान" एक ही व्यक्ति के विषय में है। यहाँ पर, "नौजवान" यह उस व्यक्ति की शक्ति पर ज़ोर दे रहा है, जो अपने जीवन के बलशाली समय का रहा होगा।

इस व्यंग्यात्मक गीत में लेमेक का रवैया उसके पूर्वज कैन से काफ़ी अलग था। उसने हत्या की और फिर उसे छिपाने की कोशिश की, जब परमेश्वर ने उसका सामना किया तो अपने भाई के ठिकाने से अनभिज्ञ होने का नाटक करने लगा (4:9)। इसके विपरीत, लेमेक को अपने किए पर गर्व था और वह अपनी पत्नियों के सामने, और शायद दूसरों को, यह घोषित करना चाहता था कि वे जान जाए कि वह एक भयंकर व्यक्ति था।

आयत 24. अपने अपराध से संबंधित होने के बाद, लेमेक ने कहा, **"अगर कैन का पलटा सात गुणा लिया जायेगा, तो लेमेक का सतहत्तर गुणा।"** एक बार फिर से, यहाँ यह स्पष्ट नहीं है कि उसका अर्थ क्या था? हो सकता है कि NLT में इस विचार को कि: "अगर कोई कैन को मारे तो उसको सात गुणा दण्ड दिया जाएगा [4:15], तो जो मुझे मारता है उसको सत्तर गुणा दंडित किया जाएगा"! यदि यह सही है, तो लेमेक उस व्यक्ति को अभिशाप दे रहा था जो उसके अपराध के लिए उसका न्याय करे।

यह हो सकता है, तथापि, कि लेमेक ने *स्वयं को* उस व्यक्ति से प्रतिशोध लेने

वाले के रूप में देखा (परमेश्वर को नहीं) जो उसकी जान लेने की कोशिश करे। यहाँ पर, वह अहंकार से भर कर कह रहा था कि उसकी सज़ा परमेश्वर के द्वारा कैन को मार डालने वाले पर ठहराये गये दण्ड की तुलना में बहुत अधिक होगा। "सतहत्तर गुणा" अतिशयोक्ति है, जिसका अर्थ है अत्यधिक दण्ड।[26] अगर कोई उस युवक की हत्या के मामले में उसे दंडित करने की कोशिश करेगा तो वह उसे नष्ट करेगा। अंक "7" का उपयोग संपूर्णता और सिद्धता को दिखाता है, हो सकता है कि यह सात दिनों में सृष्टि के निर्माण के वर्णन पर आधारित हो, जिसने परमेश्वर का दिव्य विश्राम भी शामिल है। हालांकि, लेमेक ने इसका उपयोग अत्यधिक दुष्टता के लिए किया था।

अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा का मतलब यह हो सकता है कि लेमेक एक प्रकार की हत्या करनेवाली मशीन बन गया हो, उत्पत्ति 6:4, 5, 11 में हिंसा करने वाले शक्तिशाली पुरुषों का अग्रदूत। हो सकता है यही कारण था कि कैन की वंशावली का वर्णन सातवीं पीढ़ी तक आकर रुक गया है: शायद लेखक इस बात पर ज़ोर देना चाहता था कि, आदम से सातवीं पीढ़ियों के भीतर, नैतिक और आत्मिक गिरावट - घृणा और हत्या - करने की भावना अपने चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी; और लेमेक इसका प्रतीक बन गया था। जिन्होंने पृथ्वी पर हाहाकार मचाया था उन के नाम को जोड़ना अनावश्यक था, परन्तु उनके पाप आखिरकार परमेश्वर के न्याय जलप्रलय की ओर ले गये (अध्याय 6-8)।

शेत और उसका परिवार (4:25, 26)

[25]और आदम अपनी पत्नी के पास फिर गया; और उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम यह कह के शेत रखा, कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल के बदले, जिस को कैन ने घात किया, एक और वंश ठहरा दिया है। [26]और शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने उसका नाम एनोश रखा, उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे।

आयत 25. आदम से लेमेक तक की सात पीढ़ियों की संक्षिप्त सूची के बाद, यह वचन कैन के वंश और शेत के वंश के बीच एक अंतर को दिखाता है। ये तीसरी बार है जब लेखक ने कहा है कि मनुष्य (**आदम** दो बार और कैन एक बार) **अपनी पत्नी के पास गया** और **उसने एक पुत्र को जन्म दिया** (4:1, 17, 25)। हव्वा ने इस बेटे को **शेत** नाम दिया। इब्रानी लेखों में, इस नाम שֵׁת *(शेत)* और हव्वा के कथन, **"परमेश्वर ने मेरे लिए हाबिल के बदले एक और वंश को नियुक्त** [שָׁת, *शाथ*] **किया है, क्योंकि कैन ने उसे मार डाला"** के बीच शब्दों का द्वंद्व नज़र आता है।

यह शब्द उन शब्दों से भिन्न है जो हव्वा ने कैन के जन्म के समय कहे थे (4:1), जहां पर वह स्वयं पर ध्यान केंद्रित करती है ("मेरे पास है ...")। शेत के जन्म के समय, उसका ध्यान प्रभु पर था ("परमेश्वर ने ...")। यह हव्वा में कुछ

आत्मिक परिपक्वता के विकास की ओर संकेत करता है। वह स्पष्ट रूप से शेत के जन्म को परमेश्वर की प्रतिक्रिया के रूप में देखती है जिसे उसने उसके धर्मी पुत्र हाबिल, जिसे कैन ने मार डाला था के बदले में दिया था। इसके अलावा, उसने शेत को एक और "वंश" के रूप में पुकारा זֶרַע *(ज़ेरा)*, जिसका अर्थ है "बीज।" यह शब्द "बीज" उस वायदे की याद दिलाती है जिसके अनुसार यह सर्प के सिर को कुचलेगा (3:15)। जबकि हमें यह नहीं पता कि उसने इस वायदे की कैसे व्याख्या की होगी (3:15 पर टिप्पणी देखें), उसके बयान का यह अर्थ निकलता है कि वह हाबिल की तरह धर्मी वंश को शेत के माध्यम से आने के बारे में विचार करती हैं। उत्पत्ति के बाकी हिस्सों में वर्णित उन लोगों में से कई लोग इस उम्मीद को पूरा करते प्रतीत होते हैं।

आयत 26. शेत के ज्येष्ठ पुत्र **एनोश** के जन्म की घोषणा का मतलब है कि वायदा किए हुए "बीज" की आशा जारी है। "एनोश" (אֱנוֹשׁ *'Enosh*) भी אָדָם (*'adam*; देखे 1:26, 27; 5:1-5) जैसे एक और शब्द की तरह है। इसका सामान्य अर्थ "आदमी" हो सकता है (अय्यूब 36:25; भजन 8:4), और यह एक विशिष्ट व्यक्ति के नाम के रूप में कार्य करता है (यहाँ और 5:6-11 में)। एनोश के प्रभाव के माध्यम से, **मनुष्य परमेश्वर को पुकारने लगे**। आमतौर पर यह अभिव्यक्ति उत्पत्ति में पितरों की धार्मिक गतिविधियों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए इस्तेमाल किए जाने लगी (12:8; 13:4; 21:33; 26:25)। यह आराधना के लिए प्रयोग किया जाने लगा, आम तौर पर प्रार्थना और प्रभु के लिए बलिदान के लिए। यहाँ पर लेखक परमेश्वर की नियमित रूप से की जाने वाली आराधना के प्रारम्भ के सबूत को सूचित कर रहा है, जैसा कि उसने पशु-पालन, संगीत, और धातु विज्ञान के प्रारम्भ को ढूंढा था।[27]

अनुप्रयोग

पाप का अलगाव (4:1-16)

पाप परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन है (1 यूहन्ना 3:4), चाहे वह मौखिक नियम हो, लिखित नियम, या मनुष्य के हृदय पर लिखा नियम हो (रोम. 2:12-15)। परमेश्वर के स्वरूप में बनाये गये, प्रत्येक मनुष्य के पास पहले से ही नैतिक चेतना होती है। प्रारम्भिक काल से ही, जब लिखने की कला का आविष्कार भी नहीं किया गया था, परमेश्वर मौखिक रूप से मानव जाति के लिए अपनी इच्छा को प्रकट करता था जैसा उन्होंने आदम और हव्वा, कैन, नूह, और दूसरों के साथ किया था।

परमेश्वर की आज्ञाएं मनमाने नियम और रोक-टोक नहीं थे जो लोगों के जीवन में आनंद खत्म करने के लिए बनाये गये थे। इसके विपरीत, परमेश्वर ने अपने नियमों को एक बहुतायत का और पूर्णता का जीवन यापन करने के लिए दिशा निर्देशों के रूप में दिया था। पाप कभी भी अवैयक्तिक नियमों को तोड़ने के विषय में नहीं था, पापी मनुष्य दैवीय नियमों को न मानने के द्वारा स्वयं ही उन्हें

तोड़ने लगते हैं।

भीतरी अलगाव की भावना। मानवीय मानसिकता में पाप एक विनाशकारी परिणाम लाता है। यह मनुष्य के व्यक्तित्व के गहरे स्तर पर अलगाव का कारण बनता है। एक पापी मनुष्य अपने व्यक्तित्व के आंतरिक भाग में एक गृह युद्ध का अनुभव करता हुआ पाता है। पौलुस इस संघर्ष को इस प्रकार से वर्णित करता है:

> क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं। ... परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! (रोमियों 7:19, 23, 24)।

इस प्रकार के संघर्षों का सामना सभी मनुष्य करते हैं, कम या अधिक, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कैसे एक व्यक्ति पाप का सामना करता है। जो व्यक्ति पाप को छिपाने की कोशिश करता है, और एक पापी और विनाशकारी जीवन शैली में धर्मी होने का नाटक करता है वह एक प्रकार का आत्मिक पागल बन जाता है। कैन के साथ भी ऐसा हुआ प्रतीत होता है: एक किसान के रूप में कठिन मेहनत करके और परमेश्वर के लिए एक भेंट के रूप में अपनी फ़सल का कुछ भाग लाकर, वह अच्छा बेटा बनने का नाटक करने लगा, ज़िम्मेदार और धार्मिक दोनों ही रूप में।

हालांकि, सतह के नीचे वह अपने भाई हाबिल के विरुद्ध सभी प्रकार के नाराज़गी, घृणा, और जलन की भावनाएं पाल रहा था। वह परमेश्वर से भी क्रोधित था, संभवतः उसके माता पिता को अदन से बाहर निकालने और उन सभी के लिए जीवन को कठिन बनाने के लिए। निश्चित रूप से, वह अपने भाई के बलिदान को स्वीकार करने और उसके बलिदान को अस्वीकार करने के लिए परमेश्वर से क्रोधित था। परमेश्वर के सम्मुख अपने पाप को मान लेने के बजाए और क्षमा मांगने के बजाए जो कि उसकी आत्मा को चंगाई पहुंचा सकती थी, कैन ने अपने व्यक्तित्व को क्रोध के विस्फोट में बिखरने दिया। जब वह अपने दोहरे व्यक्तित्व के तनाव और अलगाव की भावना को तथा अपने पाखंड को नियंत्रित न कर सका, तब उसने अपने भाई की हत्या कर दी। उसने अपने दुष्कर्म को छिपाने की कोशिश की और फिर परमेश्वर से झूठ बोला, अपने सब कार्य की जानकारी को भी नकार दिया।

एक परिवार में अलगाव की भावना। अध्याय 3 पहले जोड़े, आदम और हव्वा के जीवन में अलगाव को दिखाता है जो पाप के कारण हुआ था। जब उन्होंने पाप किया और परमेश्वर ने उनका सामना किया, तो वे बहाने बनाने लगे। आदम ने पहले अपनी पत्नी हव्वा को दोषी ठहराया, और फिर उसने उसे देने के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराया। निस्संदेह उसको इस से ठेस पहुंची थी, और उसने स्वयं को बचाने के लिए सर्प को दोष देने की कोशिश की। उस समय आदम को हव्वा एक "सहायक," के रूप में नहीं परन्तु एक बाधा या ठोकर के रूप

में नज़र आ रही थी। यह पहला पाप और उसके बाद के परिणाम ने निश्चित रूप से कुछ हद तक उनके रिश्ते को क्षतिग्रस्त कर दिया था, विशेषकर यदि आदम उसे बार-बार याद दिलाता हो कि वह स्वर्ग से निकाले जाने के नुकसान के लिए ज़िम्मेदार थी। हो सकता है कि कड़वी भावनाएं वाटिका से बाहर निकाल दिये जाने के लंबे समय के बाद तक बनी रही होंगी।

पाप कोई ऐसी बात नहीं है कि जो लोगों को जन्म के समय विरासत में मिलती हो (देखें 4:6-8); हालांकि, बुरा व्यवहार और परमेश्वर और परिवार के सदस्यों की ओर असंतोष माता-पिता के कामों और शब्दों से घर ही में सीखा जा सकता है। बेशक, यह बच्चों की अपने पापों के प्रति ज़िम्मेदारी को उठाने को कम नहीं करता, और न ही इस बात की अनुमति देता है की उनके कार्य उनके माता-पिता (या परमेश्वर) की गलती का परिणाम है। वचन हमें यह नहीं बताता कि आदम और हव्वा ने कैन को क्या सिखाया था या उसने उनके व्यवहार से जीवन और परमेश्वर के विषय में क्या सीखा जैसे-जैसे वह बड़ा हो रहा था।

इसी तरह, हम यह नहीं जानते कि हाबिल का जन्म होने तक कितना समय बीत चुका था। हो सकता है कि 5:3 में दिए गये इस वर्णन के अनुसार कि आदम 130 वर्ष का था जब वह शेत का पिता बना, कई साल बीत चुके हों। क्या आदम और हव्वा हाबिल के जन्म के समय तक अपने नजरिए और कार्यों को बदल चुके थे? यदि हां, तो दूसरे और तीसरे बेटों ने हो सकता है कि ज्येष्ठ की तुलना में एक अलग ही माहौल का अनुभव किया हो, वह भी एक ही घर में। जो भी बात है, कैन हाबिल या शेत से बहुत अलग था। उसका भाग्य परमेश्वर द्वारा निर्धारित नहीं किया गया था, न ही उसके माता-पिता, या उसके वातावरण द्वारा। उसके पास चुनने की क्षमता थी, और वह अपने निर्णयों के लिए स्वयं ज़िम्मेदार था।

शायद हाबिल, छोटा पुत्र, अपने माता-पिता के द्वारा अधिक लाडला बन गया, क्योंकि वह हमेशा से एक "अच्छा लड़का था।" इस स्थिति में, जब परमेश्वर ने उसके बलिदान को स्वीकार कर लिया और कैन के बलिदान को खारिज कर दिया, हो सकता है कि यह बड़े भाई के अहम के सहने से बाहर हो गया। जो भी कारण हो, कैन अपने छोटे भाई के प्रति नफरत से भर गया। परमेश्वर, यह जानते हुए कि कैन के दिल में क्या चल रहा था, उसे चेतावनी देता है कि यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी और होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा (4:7)। हालांकि, इससे यह स्पष्ट हो गया की यह कैन की क्षमता से परे था। उसने अपनी घृणा और आक्रोश से भर कर, हाबिल की हत्या की और उसे ज़मीन में दफन कर दिया। जब परमेश्वर ने उसका सामना किया और पूछा, "तेरा भाई हाबिल कहां है?" उसका जवाब था, "मैं नहीं जानता। क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं" (4:9)।

कैन की नफरत और ईर्ष्या ने उसे अपने भाई की हत्या करने के लिए प्रेरित किया। परमेश्वर अपने लोगों के लिए जो इच्छा रखता है यह रवैया उसके विपरीत है। यूहन्ना लिखता है, "क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें। और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से

था, और जिस ने अपने भाई को घात किया ..." (1 यूहन्ना 3:11, 12)। कैन ने हाबिल के ठिकाने या ठीक-ठाक होने के किसी भी जानकारी की ज़िम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया। उसके पापमय, अहंकारपूर्ण दिल ने उसके कार्यों को उसके विवेक से अलग कर दिया, जिसका दुखद परिणाम यह रही कि उसने अपने भाई के निर्दोष जीवन को जान-बूझकर ले लिया।

एक परिवार और समाज से अलगाव। एक व्यक्ति उस पीड़ा की कल्पना मात्र ही कर सकता हैं जो कैन ने हाबिल की नृशंस हत्या के द्वारा अपने पिता और मां पर डाल दी। यदि अध्याय 3 मानव जाति के प्राचीन पवित्रता से पतन को प्रस्तुत करता है, तो अध्याय 4 परमेश्वर की इच्छा के विपरीत परिवार के पतन को दर्शाता है। हत्या पारिवारिक जीवन में एक खूंटे को गहराई से गाड़ चुकी थी जिसे हटाया नहीं जा सकता है। कैन ने एक क्रूर, बेवजह हत्या तो की; और उसके लिए कोई पछतावा भी नहीं दिखाया, तो स्पष्ट रूप से वह घर में रहने के हिसाब से खतरनाक था। कैन मृत्यु दंड के योग्य था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया करके उसे एक भगोड़ा और एक भटकने वाले मनुष्य का जीवन बिताने के लिए अनुमति दी। यदि वह अपने परिवार के साथ शांति से नहीं रह सकता है, तो उसे उन लोगों से अलग रहना होगा।

जब कैन दिव्य दंड को सुनता है कि उसे बाहर निकाला जा रहा है, वह भयभीत हो गया और शिकायत करने लगा कि जो कोई भी उसे पायेगा उसे मार डालेगा (4:14)। हालांकि उसने अपने धर्मी भाई कि हत्या की थी और परमेश्वर को उसके अपराध के एवज़ में उसे मार डालने का पूरा अधिकार था, कैन ने परमेश्वर की दया के बदले में किसी भी प्रकार का आभार व्यक्त नहीं किया। वह परमेश्वर द्वारा अपने लिए ठहराए गये सुरक्षा के चिन्ह के लिए भी धन्यवादित नहीं हुआ जिसके कारण कोई उसे हानि नहीं पहुंचा सकता। वास्तव में, कैन परमेश्वर को दोष देने लगा कि उसने पृथ्वी पर भगोड़ा बनकर जीने के लिए जो दंड दिया है वह बहुत अधिक कठोर है। कुछ भी कैन के दिल को न तो नम्र कर पाया और न ही पश्चाताप की ओर ले जा पाया। स्पष्ट रूप से वह स्वयं को जीवन भर प्रताड़ना के शिकार के रूप में देखने लगा, और परमेश्वर तथा मानव जाति के विरुद्ध नफरत पालता रहा क्योंकि उसके अनुसार उन्होंने उसके साथ अन्याय किया था।

इस प्रकार का प्रतिशोधी रवैया कैन से उसकी भावी पीढ़ी को विरासत में मिला, और यह लेमेक के गर्व से स्पष्ट होता है जब वह एक जवान मनुष्य को मारने के विषय में बताता है (4:23, 24)। जब एक पापी अपने पाप को स्वीकार करने में और अपने कार्यों के लिए ज़िम्मेदारी लेने में विफल हो जाता है, तो उसका परिणाम कई पीढ़ियों तक रहता है।

परमेश्वर से अलगाव। जब आदम और हव्वा ने वाटिका में पाप किया, आत्मिक अलगाव उत्पन्न हुआ; वे परमेश्वर से अलग हो गए थे। वे परमेश्वर की उपस्थिति से डर गये थे और उससे छिपने की कोशिश करने लगे। यह कैन के साथ भी हुआ: जब प्रभु ने उसके अपराध के लिए उसका सामना किया और

उसको दंड दिया, उसने शिकायत की, कि वह परमेश्वर के "सामने" से छिपा होगा और एक भगौड़े की तरह होगा और संसार में भटकता रहेगा (4:14)। पाठ के अनुसार "कैन प्रभु के सम्मुख से बाहर चला गया, और नोद [भटकना] नामक जगह पर बस गया जो अदन के पूर्व में थी" (4:16)। (पाठ में दो शब्द, "सामना" और "उपस्थिति," एक ही इब्रानी शब्द से अनुवाद किए गये हैं, פָּנִים *[पानिम]*।)

4:14, 16 की भाषा के अनुसार भौतिक दूरी का अर्थ निकलता है, क्योंकि कैन अदन की वाटिका से दूर चला गया था। यह भौतिक दूरी एक व्यक्ति के आत्मिक अलगाव को दर्शाती है जो परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करने के कारण उसके अनुग्रह से गिर गया था (अय्यूब 13:24; भजन 13:1; 44:24; 88:14; 132:10)। कैन अपने पाप की वजह से, परमेश्वर के "सामना" या "उपस्थिति" से दूर हो गया था।

जब एक पापी पश्चाताप करता है, और परमेश्वर की कृपा और क्षमा चाहता है, और जिसे पुनः स्वीकार किया जाता है, परमेश्वर का चेहरा उस पर फिर से "प्रकाशमान" हो जाता है (देखें भजन 80:19)। दूसरे शब्दों में, अलगाव (विछोह) थम जाता है, और व्यक्ति एक बार फिर से परमेश्वर की कृपा और आशीष का अनुभव करने लगता है (गिनती 6:24-27; भजन 4:6; 44:3; 80:3, 7, 19; 89:15)।

अलगाव की भावना (विछोह) का अनुभव कैन अपने ज़िद्दी, व बिना पश्चाताप के रवैये के कारण से कर रहा था। परमेश्वर हमेशा पापियों को क्षमा करने व ग्रहण करने के लिए तैयार रहता है जो आज्ञाकारी होकर उसके पास लौट आते हैं। पौलुस एक समय यीशु से नफरत करता था और मसीहियों की हत्या करता था (1 तिमु. 1:12-16)। बहुत से यहूदी जो पिन्तेकुस्त के दिन बदल रहे थे यीशु के क्रूस पर चढ़ाये (हत्या) जाने की मांग करते थे (प्रेरितों 2:22, 23, 36-41)। कुछ मसीही पहले मूर्ति पूजा और अन्य जातियों की दुष्टता के अनुसार जीवन बिता रहे थे (प्रेरितों 26:17, 18; इफि. 2:11-16)। यह सब, बहरहाल, पश्चाताप कर चुके थे, और परमेश्वर ने उन्हें माफ़ कर दिया था। यदि कैन परमेश्वर की उपस्थिति से दूर अपने जीवन को बिताना चाहता था और नहीं चाहता था की उसका "चेहरा" फिर उस पर प्रकाशमान हो तो उसका कारण सिर्फ उसका घमंड था। उसका कठोर हृदय उस उद्धार और आशीषों को उस तक पहुँचने से रोकता रहा जो परमेश्वर उसे देना चाहता था।

"प्रभु का नाम" (4:26)

उत्पत्ति 4:26; 12:8; और 26:25 में लोगों को "प्रभु का नाम" को पुकारते हुए देखा जा सकता है।

आलोचकों का कहना है कि उत्पत्ति के वे पद जिन में लोग "प्रभु के नाम" יהוה *(यहवह)* या "यहोवा" को पुकारते है वे निर्गमन 6:3 में दिए गये कथन को काटते हैं। इस पद में, प्रभु ने कहा, "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम से अब्राहम, इसहाक, और याकूब को दर्शन देता था, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रगट

न हुआ।" यहाँ पर उठाया गया तर्क पहली बार देखने पर ठीक लगता है। हालांकि, निर्गमन के शक्तिशाली छुटकारे के कार्यों में, परमेश्वर अपने व्यक्तिगत नाम के माध्यम से अपने अद्वितीय स्वभाव को मूसा और इस्राएल पर प्रकट करता है। सबसे पहले, वह मूसा को अपना नाम "मैं हूँ" बताता है (इब्रानी क्रिया का प्रथम व्यक्तिवाचक "हो सकता," הָיָה *[हया]*, निर्गमन 3:14)। परमेश्वर चाहता था कि इस्राएली उसे जीवित परमेश्वर के रूप में जाने, जो है और जिसका अस्तित्व है, और जो मिस्र के निर्जीव देवताओं की तरह नहीं है। दूसरा, "यहोवा" अच्छी तरह से इब्रानी क्रिया का कारणवाचक रूप "हो सकता है," जिसका अर्थ सिर्फ परमेश्वर "मैं हूँ," नहीं है, परन्तु यह भी की परमेश्वर वह है जो "बातें होने का कारण" है। वह परमेश्वर है जो अपने लोगों को छुड़ाने के लिए इतिहास में कार्य कर सकता है। वह जल्द ही दस विपत्तियों के साथ मिस्र के देवताओं को परास्त करने के द्वारा इसका प्रदर्शन करेगा, लाल सागर को विभाजित करके इस्राएलियों को निकलने में सहायता करेगा, और उन्हें सुरक्षित रूप से वायदे के देश में ले जाएगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस्राएलियों के लिए मूसा के संदेश को विश्वसनीय बनाने का एक ही तरीका हो सकता है, इस बात का प्रचार करना कि जो परमेश्वर उसे वापस मिस्र लेकर आया है वह उन के पितरों का परमेश्वर है। "यहोवा" नाम मंद पड़ी यादों को जगा देगा और लोगों को भविष्य के लिए आशा देगा क्योंकि वे इस्राएल के लिए परमेश्वर के प्रेम और मिस्र पर उसकी सामर्थ्य के प्रकट होने का इंतज़ार कर रहे थे।

परमेश्वर ने मूसा को ये निर्देश दिए, "फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, कि तू इस्राएलियों से यह कहना, कि तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, अर्थात अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर, यहोवा उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देख सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी-पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।" (निर्गमन 3:15)। जो परमेश्वर ने मूसा और इस्राएल पर प्रकट किया था वह कोई नया नाम नहीं था; न ही यह "यहोवा" शब्द की एक नई वर्तनी या एक नया उच्चारण था। वह पहली बार अपने नाम का दिव्य स्वभाव और चरित्र को अवगत करा रहा था। इस तरीके से, वह मूसा को अपने विषय में एक महान समझ दे रहा था जो उसने पितरों को भी नहीं दी थी।

पाप और उद्धार

कैन की तरह, तथा आदम और हव्वा की तरह, सभी लोगों ने पाप किया है; परंतु क्षमा और छुटकारा मसीह यीशु के द्वारा उपलब्ध हैं (रोमियों 3:23, 24)। यीशु "इसलिये प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं" (1 यूहन्ना 3:5) है। जो लोग "मसीह में" होना चाहते हैं और अनन्त जीवन पाना चाहते हैं उन्हें परमेश्वर के दिव्य पुत्र के रूप में उस पर विश्वास करना होगा (1 यूहन्ना 5:13) जो संसार में मेल मिलाप कराने आया, और हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए आया (1 यूहन्ना 2:2; 4:10; देखें रोमियों 3:25; NIV)।

पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मारा गया। (1 कुरि. 15:3), और हमें "पाप के लिए मरने और धार्मिकता में जीने के लिए" कहा गया है (1 पतरस 2:24)। इसके लिए पश्चाताप की आवश्यकता है (प्रेरितों 2:38; 17:30)।

पिछले पापों से छुटकारा पाने का एक ही तरीका है उन्हें बपतिस्मा के कार्य के द्वारा धोना (प्रेरितों 22:16)। इब्रानियों 9:22 कहता है कि "बिना लहू बहाये क्षमा नहीं है," लेकिन यह पद आगे विस्तारपूर्वक बताता है कि यीशु ने "सभी के पापों के लिए एक ही बलिदान सर्वदा के लिए दे दिया" (इब्रा. 10:12)। इसलिए "सब ने ... मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है" (रोमियों 6:3), "हम ... उसके लहू के द्वारा छुड़ाए" गए हैं (इफिसियों 1:7)। मसीही - जिन्होंने मसीह में बपतिस्मा लिया है - पाप के लिए मर चुके हैं लेकिन परमेश्वर में मसीह यीशु के द्वारा जीवित हैं (रोमियों 6:11) और उनके पास "नए जीवन में चलने" का अवसर है (रोमियों 6:4)।

समाप्ति नोट्स

[1]लियोनार्ड जे. कोप्स, "קוּן," *TWOT* में, 2:797-98. [2]जॉन इ. हार्टले, *जेनेसिस,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पिबॉडी, मास: हैनंड्रिकसन पब्लिशर्स, 2000), 79. [3]"तारागुम आफ़ ओन्केलोस" में *तारागुम* अनुवाद जे.डब्लू. एथेरिज (न्यूयार्क: के.टी.ए.वी. पब्लिशिंग हॉउस, 1968), 42. [4]वाल्टर सी. कैसर, जे.आर., *टूवर्ड्स एन ओल्ड टेस्टामेंट थियोलोज* (ग्रैंड रैपिड्स, मिक ज़ोनडरवन पब्लिशिंग हॉउस 1978), 37) [5]"तारागुम आफ़ पैलेसटाइन" में *तारागुम,* 170. [6]विक्टर पी. हैमिल्टन, "הֶבֶל," *TWOT* में, 1:204-5। [7]हाबिल के नाम का अतिरिक्त अर्थ की सलाह दी जा रही है। कुछ का मानना है कि यह अकेडियम शब्द *अपलु* से लिया गया है जिसका अर्थ "पुत्र" या "उत्तराधिकारी" है। कुछ अन्य का मानना है कि यह "जबाल" का विरुप है जिसका अर्थ "चरवाहा" या "भेड़ों को चराने वाला" है (देखें 4:20)। फिर भी हेबेल को हम "वाष्प" या "श्वास" के रूप में ही समझ सकते हैं (रिचर्ड एस. हेस, "एबेल," *एंकर बाइबल डिक्शनरी,* सम्पादक डेविड नोएल फ्रीडमैन [न्यू योर्क: डबलडे, 1992], 1:10)। [8]कलान्तर में याकूब (30:36), मूसा (निर्गमन 3:1) और दाऊद (1 शमूएल 16:11) जैसे जाने पहचाने लोगों का प्रमुख पेशा बन गया था। [9]कैन ने अपने पिता आदम का पेशा अपनाया (3:17-19)। [10]लैव्यव्यवस्था 2 (एंव अन्य अनुच्छेदों) में KJV *मिनखाह* का अनुवाद "होम बलि" के रूप में करता है, जबकि गद्यांश "अन्न बलि" पर जोर देता है (देखें NKJV; NASB; NRSV; ESV)।

[11]इस शब्द का सामान्य अर्थ पालतू जानवरों या गुलामों का "लेटना" होता है (उत्पत्ति 29:2; भजन 23:2; यशा. 13:20; 14:30; यहेज. 34:14); लेकिन उत्पत्ति 4:7 और 49:9 में इसका अर्थ है "एक खतरनाक जानवर का शिकार पकड़ने के लिए" तैयार होना है और इसका अतिशयुक्तिपूर्ण भाषा में प्रयोग होना है। (विलियम व्हाइट, "רבץ," *TWOT* में, 2:830.) [12]जॉन ई. हार्टली, "שָׁמַר," *TWOT* में, 2:939-40. [13]अय्यूब पर जो विपत्तियाँ आईं उसमें वह शैतान की भूमिका से वह अज्ञात था इसलिए उसने अपने विपत्ति का दोष परमेश्वर पर डाल दिया। उदाहरण के लिए अय्यूब 16:12, 13 में उसने परमेश्वर को निर्दयी ठहराया क्योंकि उसको लगा कि परमेश्वर ने उसको "निशाना" बनाया और उस पर वह "तीर" चलाता है जो उसके "गुर्दों को टुकड़े टुकड़े कर डालता है" और उसके "पित्त वह भूमि पर बहाता है।" इसके अलावा इसी प्रकार के अन्य आरोप इस पुस्तक में पाए जाते हैं। [14]केन्नेथ ए. मैथ्यूस, *जेनेसिस 1-11:26,* द न्यू अमेरिकन कमेन्ट्री,

वॉल्यूम 1A (नैशविल्लेः ब्राडमैन एण्ड हॉलमैन पब्लिशर्स, 1996), 277. [15]एल्मर बी. स्मीक, "נָקַם," *TWOT* में, 2:598-99. [16]हेल्मर रिंग्रेन, "נוּד," *थियोलोजिकल दिक्शनरी आफ दी ओल्ड टेस्टामेन्ट*, अनुवादक डेविड ई. ग्रीन, संपादक जी. जोहान्नेस बॉटरवेक्क, हेल्मर रिंग्रेन और हिंज-जोसेफ फ़ैबरी (ग्रैंड रैपिड्स, मीशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1998), 9:271. क्रिया रूप נוּד *(नुड)* का तात्पर्य "अस्थायी खानाबदोश" लोग होता है। [17]मैथ्यूस, 285. [18]जॉन ई. हार्टले, "צֹאן," *TWOT* में, 2:749. [19]गोर्डन जे. वेन्ह्म, *जेनेसिस 1-15*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वॉल्यूम 1 (वाको, टेक्सः वर्ड बुक्स, 1987), 113. [20]लुडविग कोहलर और वाल्टर बौमगर्टनर, *द हिब्रू एंड आमईक लेक्सिकन ऑफ़ दी ओल्ड टेस्टामेंट*, स्टडी एड., अनुवाद और सम्पादन एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टनः ब्रिल, 2001), 1:528.

[21]इबिड, 1:691. [22]गेर्हार्ड एफ. हसेल, दी इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया में "आयरन," रिवाइज्ड एड. सम्पादन ज्यॉफ़्री डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी.ईर्ड्मंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1982), 2:880. [23]कुछ वर्शन (ASV; NIV) में फूटनोट में इसका विकल्प "मैं मार डालूँगा" दिया गया है। NEB और REB में इसका अनुवाद "मैं मारूंगा" हुआ है। [24]देखें KJV; NKJV; ASV; RSV; NRSV; NAB; JB; NJB; NIV; NJPSV; TEV; NLT; NCV; CEV; ESV. [25]देखें KJV; NKJV; ASV; RSV; NRSV; NEB; REB; NIV; TEV; NLT; NCV; CEV; ESV. पुराने नियम में शब्द येलेद का प्रयोग अलग-अलग उम्र के लिए, जैसे शिशु (21:8); किशोर (21:16), और नौजवान (1 राजा 12:8) के लिए हुआ है। [26]इस प्रकार का आत्म-केन्द्रित और ईर्ष्यालु आत्मा का होना उसके बिलकुल विपरीत है जो मसीह अपने लोगों के लिए चाहता है। मत्ती 18:21, 22, में वह पतरस को कहता है कि किसी के पाप तू "सात गुना सत्तर बार क्षमा कर।" [27]वेन्हम, 116.